अप्रकाशित अव्यक्त वाणी-22.04.1992

आज बापदादा अपने विश्व कल्याणकारी, सेवा के सहयोगी, साथी संगठन को देख रहे हैं। सेवा के श्रेष्ठ भाग्य के निमित्त आत्माओं को देख रहे हैं। सेवा का गोल्डन चांस मिलने वाली पात्र आत्माओं को देख रहे हैं। सेवा का प्रत्यक्ष फल प्राप्त करने वाली विशेष आत्माओं को देख रहे हैं। सर्व सेवा की अपनी विशेष भुजाओं को देख रहे हैं। उतना नशा, उतना प्राप्त हुआ विशेष भाग्य स्मृति में रहता है वा सेवा में लीन हो जाते हो? किसी में भी कोई लीन हो जाता है व कोई स्मृति नहीं रहती, सेवा के लव में लीन रहते व बाप के लव में लीन रहते हो। लीन तो रहते हो लेकिन बाप के लव में लीन अर्थात् लवलीन आत्माएँ सेवा में निमित्त मात्र रहते हो वा सेवा में लीन हो जाते हो? क्या करते हो? ऐसा तो नहीं लीन हो जाते जो सुध-बुध याद नहीं रहती। क्योंकि निमित्त शिक्षक आत्माओं को एक्स्ट्रा लिफ़्ट है। बहुत जल्दी से ड्रामा अनुसार निमित्त शिक्षक बन जाते हो। कोई 3 साल में, कोई 8 साल में कोई 10 साल में निमित्त सेवाधारी शिक्षक बन जाते हो। यह लिफ़्ट किसको है? आप सबको है ना! इस विशेष लिफ़्ट का वा एक्स्ट्रा भाग्य का लाभ विशेष अपनी स्व उन्नति में यूज करते हो? प्वाइन्ट्स तो बहुत सुन लिये हैं। अगर किसी को भी कहें, योग्य शिक्षक वा आदर्श शिक्षक किसको कहा जाता है? तो सभी बहुत अच्छा भाषण कर सकते हैं। सबके पास प्वाइन्ट्स की डायरीज कितनी जमा की हैं? मुरलियों की डायरीज कितनी हैं? है ना स्टॉक? कितना है? है सभी के पास? जिसके पास कॉपीज़ हैं वह हाथ उठाओ। जिसके पास नहीं है वह दो-चार हैं। अब यह सुनाओ कि एक सेकन्ड में ब्राइट लाइट स्वरूप में स्थित हो सकते हो? जो स्थित होने वाले हैं वह हाथ उठाओ। अगर ऑर्डर मिले एक सेकन्ड में ब्राइट लाइट प्वाइन्ट स्वरूप में स्थित हो जाओ तो स्थित हो सकते हो? (किसी ने नहीं उठाया।) कोई नहीं है। देखो कैसी भी परिस्थिति या हलचल हो तो .... एक सेकन्ड में प्वाइन्ट स्वरूप में स्थित हो जाओ। हो सकते हो? हलचल के बीच में अचल रहना इसको कहा जाता है अचल-अडोल। (1992) तपस्या वर्ष किसलिए दिया? प्वाइन्ट रूप बनने के लिए ना। वैसे ही याद में बैठे हो तब प्वाइन्ट बने यह कोई बड़ी बात नहीं; लेकिन अति हलचल हो उस समय एकदम साक्षी दृष्टा बन परिस्थिति को ऐसे पार करें जैसे समुद्र की लहर में लहराने में मज़ा अनुभव करते हैं। घबराया नहीं; लेकिन विजय के आनंद की अनुभूति हो। परिस्थिति नीचे हो। स्व स्थिति ऊपर हो वा ऊँची स्थिति पर स्थित हो। नीचे का खेल देखते हो इसको कहा जाता है ऑर्डर मिला वा प्वाइन्ट स्वरूप में स्थित हो जाये।

आप सभी निमित्त शिक्षक फुल पास होने वाले हो या पास होने वाले हो? फुल पास होना है या पास होना है? उसके लिए क्या चाहिए? प्वाइन्ट रूप बनने में कितना समय हो सकता है? काग़ज़ पर हो सकते या प्रैक्टिकल हो सकते हैं? वाणी नहीं चलानी है। वाणी बहुत सुनी हैं, कॉपीज़ छपी हुई हैं। यह स्थिति पाने

के लिए कितना समय चाहिए? बाबा पूछ रहे हैं, कितने महीने या वर्ष चाहिए? (सभी के नाम सहित पूछ रहे हैं?)

आज कितना टाइम चाहिए-वह फैसला करना है? टीचर्स पहले भी जब आई बहुत वायदा किया सब बापदादा के पास है। अब भी बहुत-बहुत अच्छे-अच्छे वायदे किये हैं। लेकिन कब तक बनेंगे? बोलो। चिटकी लिखो कितना टाइम (समय) चाहिए। यह सोचो हम निमित्त सेवाधारी एक सेकन्ड भी हलचल में आवें तो जितना एक सेकन्ड में प्राप्ति की लिफ्ट है अगर ज्ञान, योग, धारणा, सेवा में 4 सब्जेक्ट में से कोई भी सब्जेक्ट में हलचल में हैं तो जिनके निमित्त हो उनके पास वायब्रेशन जाता है। वायब्रेशन, वायुमण्डल बनाता है। एक तो सेवा प्रत्यक्ष फल पदम गुणा मिलता। अगर हलचल है तो वायब्रेशन्स से वायुमण्डल बनता, यह सूक्ष्म है, सूक्ष्म हिसाब है। निमित्त बनने वालों का वायुमण्डल ज़रूर बनता है। इसका निमित्त कारण भी निमित्त सेवाधारी बनते। इसलिए सिर्फ़ सेवा करने की ज़िम्मेवारी नहीं। सिर्फ़ योग कराया, क्लास कराया वा भाषण कराया वा कोर्स करा दिया, यह कोई सच्ची सेवा नहीं। सच्ची सेवा मतलब पहले स्व का, फिर साथी आत्माओं का वायुमण्डल बनाओ। उसको कहेंगे नंबर वन सेवाधारी। अगर स्वयं ठीक हैं साथ वाले नहीं, तो नम्बर वन नहीं। नंबर दो हैं। अगर स्वयं भी हलचल में हैं तो नंबर तीन हैं।

आजकल भाषण करने वालों का, सिर्फ़ वाणी से सेवा करने वालों का उतना महत्व नहीं है। बापदादा माला में उसका नंबर आगे रखता, जो मन्सा, वाचा, कर्मणा, संबंध, सम्पर्क में.... आते स्वयं भी संतुष्ट ..... दूसरे भी उससे संतुष्ट हों। उसका नंबर आगे है। वह समय चला गया जो 50 सेंटर्स खोलने वाले नामी-ग्रामी होते थे। उसका नाम होना वह समय चला गया। अभी सेंटर भल एक हो, लेकिन बापदादा नंबर नहीं देखते; लेकिन स्थिति को देखना, पुरुषार्थ की क्वालिटी को देखना है। नंबर वन टीचर वह, जो स्वयं भी प्रगति का अनुभव करे वा जिनके लिए निमित्त है, उनको भी प्रगति का अनुभव हो। खुद भी उड़े व दूसरों को भी उड़ाए।

इस बार टीचर्स को इनाम देना है। जो एक साल खुद भी हलचल में नहीं आवे, दूसरे भी नहीं। निर्विघ्न रहें। जो भी बातें बाप को अच्छी नहीं लगती हैं उन सभी बातों से सदा निर्विघ्न रहें। ऐसा नहीं कहना थोड़ा रोना आ गया, छोटी हूँ। क्या करें? कोने में जाकर, बाथरूम में जाकर तो नहीं रोएँगे? थोड़ा मूड ऑफ करेंगी? चुप हो बैठेंगी? जब भी ऐसी बात है तो सोचो हम स्टेज पर हैं। सेंटर पर नहीं। स्टेज पर कोई रोता है? डायरेक्टर ने मुझे डाँट दिया है, रोना शुरू करें। यह ठीक नहीं है ना। ब्रह्मा बाप व शिवबाप का आपस में चिट चैट चलता है। शिवबाप ब्रह्मा बाप से पूछता है कि आपके ब्रह्माकुमार-कुमारियों का आपसे कितना प्यार है? ब्रह्मा बाप क्या कहता होगा? बहुत प्यार है। प्यार है? प्यार है तो उसकी निशानी समान बनना।

जल्दी-जल्दी समान बनो। हद की देह के प्यार वाले एक/दो को अपनी जान दे देते हैं, तो आपको कितना प्यार होना चाहिए। सिर्फ़ टीचर्स शब्द नहीं कहना। निमित्त एड करो। क्या भी हो जाये, “निमित्त” शब्द बग़ैर सिर्फ़ “टीचर” अक्षर नहीं बोलो, नहीं तो अभिमान आएगा। टीचर मतलब निमित्त। कुछ भी हो जाए वायदा नहीं तोड़ना। प्रैक्टिकल करना, सिर्फ़ बोलना नहीं। प्रैक्टिकल करेंगे? बाप को भी थोड़ी हिम्मत हो रही है। बोलें वायदा? बाप को हिम्मत देने वाले बच्चे हो गये। (हिम्मते बच्चे मददे बाप।) आज हिम्मते बाप मददे बच्चे हैं। क्योंकि आप बच्चों की मदद चाहिए ना। दुनियाँ में लोग श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ वायदा करते हैं, उसमें यही कहते हैं जान चली जाए; लेकिन वायदा नहीं जावे। तो बापदादा भी कहते हैं, अगर कोई भी परिस्थितियों के वश नाम या मान या शान चली भी जाए, सेन्टर चला जाए, स्टुडेन्ट्स चले जाएँ; लेकिन सदा बाप के प्यार में लवलीन हो, इन सब बातों से बेपरवाह बादशाह हो रहेंगे। यह हद का नाम-शान, यह हद का सेंटर, हद का जिज्ञासु यह सब बाप के प्यार के आगे स्वाहा। बापदादा सेन्टर छुड़ायेंगे। हिम्मत है? एक दो का सेंटर एक दो को देवें। दादियों को निश्चय दिला रहे हैं। विधि पूर्वक विचार देना। जहाँ कहा था ना सत्यता में सभ्यता। ईर्ष्या, द्वेष, हसद, चिड़चिड़ापन, आवेश ऐसा नहीं हो। विधि पूर्वक बात दो, फिर बड़े जैसे भी फाइनल करें बालक सो मालिक बनो। समय पर बालक बनो। समय पर मालिक बनो। मालिक बनने समय बालक नहीं बनो। बालक के समय मालिक नहीं बनो। बड़ों के लिए युक्ति युक्त बोल बोलो। अगर ऐसा-वैसा बोल निकलता है तो वह भी छोटा-सा दाग़ रजिस्टर में पड़ जाता। शब्द ऐसे व्यर्थ हो जाता है। ऐसे न हो। आजकल संख्या में अक्षर बोलते हैं। जानते हो? बापदादा ने अलग से समय दिया है। यह बड़े ते बड़ा प्यार है। कब भी बड़ी दादियों के लिए नहीं बोलो। जब भी दादियों के लिए ऐसे बोल बोलते हो तो बाप को क्या होता है, मालूम है? ख़ास ब्रह्मा बाप की आँखें नीची हो जाती हैं। ऐसे कोई बात देने के लिए ऐसे बोल बोलते हो तो ठीक नहीं है। यह दादियाँ हैं ही ऐसी। यह इनकी ही बात सुनते हैं। यहाँ भी पॉलिटिक्स होता है। यहाँ ऐसे-ऐसे बोल नहीं निकलें। बड़ी दादी या बड़े भाई के लिए ऐसी बात न हो। किसी का तो सुनकर फ़ैसला करेंगे ना! बड़े को ऐसे-ऐसे शब्द नहीं बोलना। छोटों के लिए प्यार हो व रिगार्ड हो। रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। बीती हुई बातों का वायुमण्डल नहीं बनाओ। जितनी सेवा करते हो उतना विघ्न में आते हो, तो वह जैसे (मिलावट) होता है। तो मिलावट करते हैं तो क्या होता है? ऐसी सेवा करते हैं तो निमित्त सेवाधारी द्वारा या स्टुडेन्ट द्वारा विघ्न आता है, तो वह सेवा है? सेवा बढ़ रही है, स्टूडेन्ट बढ़ रहे हैं। बापदादा टचिग करके विघ्न होते हुए भी सेवा बढ़ा रहा है। आप नहीं बढ़ा रहे हो। बाप को समय पर राजधानी तैयार करनी ही है। उसमें निमित्त बनने का लिफ़्ट है, वह लेना है। मुख्य आपका टचिग बाप का होता है। टीचर अगर निमित्त मात्र है तो उसकी निशानी है- स्वयं को व दूसरों को और सबको संतुष्टता का

अनुभव होगा। माइन्ड आपका है, माइट बाप का है। बाप निमित्त बना के कर्मों का फल देता है। तो यथार्थ सेवा का फल कैच करो। खुद भी डिस्टर्ब, दूसरे भी डिस्टर्ब- यह सेवा नहीं। एक सेंटर भी निर्विघ्न है और सब प्रगति को प्राप्त कर रहे हैं। यह निशानी है। वह एक को ही प्राइज मिलेगा ना। कि 50 सेंटर वाले को? क्वालिटी को देखो, धारण स्वरूप सरेन्डर बुद्धि की क्वालिटी हो। सारे सीजन में क्या देखा? क्वालिटी बड़ी है, भावना वाले ज़्यादा हैं। धारणा युक्त, ज्ञान युक्त, योगयुक्त, युक्तियुक्त आत्माएँ हो। राज़ी रहना, राज़ी करना। हर हालत में राज़ी रहना। अगर कोई ऑफर करते हैं- सेंटर खोलो। तो खुशी से खोलो। कोई कहते हैं- सेंटर दो। तो खुशी से दे दो। अगर एक सेवाकेन्द्र से संतुष्ट हैं तो 100 सेवाकेन्द्र से अच्छा है। एक 100 से अच्छा है, अगर संतुष्ट हैं तो। सब आपस में संतुष्ट हैं? संतुष्ट हैं? (छोटे बड़े को रुलाते हैं) ना छोटों को रुलाना है, ना बड़ों को रोना है। ना खुद रोना, ना रुलाना। रोने की दुनियाँ समाप्त हो गई ना! अब भी रोना है तो ब्रह्माकुमारियाँ क्यों बनीं? खाओ, पीओ, वीडियो, कैमेरा देखो मज़ा करो। बीकेज़ किसलिए बनी हैं? स्व परिवर्तन व विश्व परिवर्तन के लिए ना। पहले स्व, स्व के बाद पीछे साथियों का परिवर्तन, फिर स्टूडेन्ट का, फिर सेंटर का, फिर विश्व परिवर्तन। यह स्टेप्स याद रहता है या जंप लगा देंगे, पहले विश्व परिवर्तन बाद में स्व परिवर्तन? बापदादा सभी शिक्षा साथियों को देख बार-बार भाग्य की महिमा करते हैं। ऐसा भाग्य किसी को नहीं मिला है। गोल्डन चांसलर होना। हो गोल्डन तो क्या डायमंड चांस है? चांस बड़ा है दिल छोटा है। तो क्या होगा? जैसे बहुत ग़रीब होता है, लॉटरी बड़ी होती है तो समा नहीं सकता ना। ऐसे भाग्य बड़ा है उसको प्रयोग (Practical) में लाओ। वरदान बहुत है। प्रैक्टिकल में लाओ, यूज करो। स्वरूप बनो। वरदाता वरदान देता है। उसका स्वरूप जल्दी नहीं बनते तो ताक़त नहीं रहेगी। जैसे ताक़त का भोजन होता है, दो दिन के बाद उसको खाओ तो ताक़त आएगी? वैसे बापदादा वरदान देते हैं तो उसको उसी समय प्रैक्टिकल में लाओ। हर समय प्रयोग करो। नहीं तो फिर वह वरदान फल स्वरूप नहीं होता है। फिर कहते हो कुछ भी नहीं हुआ, मेरा भाग्य ही ऐसा है। मुरली भी आज सुनने समय उमंग-उत्साह आता है, फिर 4 दिन के बाद उमंग-उत्साह कट जाता है। ताक़त नहीं भरती है। कोई कहते हैं- अभी नहीं, फिर 4 दिन के बाद पढ़ेंगे। वह चार दिन के बाद पढ़ेंगे तो भी नियम पालन करने हैं- ताक़त नहीं आती है। हर वरदान को तुरंत प्रयोग करो, कर्म में लाओ, स्व परिवर्तन प्रति प्रयोग करो या सेवा प्रति प्रयोग करो। वाणी का भी महत्व है; लेकिन प्रयोग करने वाले को एक सेकिन्ड में प्राप्ति हो जाती है। वह एक सेकन्ड एक वर्ष समान होता है। अगर प्रयोग ताज़ा में नहीं लाते हैं तो। योगी बने हो। प्रयोगी बनो।

अच्छा, सेंटर बदली करना हो तो करेंगे? सेंटर बदली हो या न हो; लेकिन आपको बदली होना ही है। किससे? पुराने स्वभाव संस्कारों को पूरा बदलना है। बाक़ी करना होगा तो करेंगे; लेकिन अचानक करेंगे।

नहीं करना है तो नहीं करेंगे। सेंटर बदलने के पहले बापदादा समय देता है। बापदादा के स्मृति दिवस तक स्वभाव-संस्कार सभी को बदलना है। अभी से बदल के जाना। ऐसा नहीं 18 जनवरी तक समय है। अभ्यास अभी से ही चाहिए। अचानक अभ्यास नहीं हो सकता है। 18 जनवरी तक सबको बदलना है। स्टूडेन्ट्स को भी महसूस हो कि यह चेन्ज है। सत्य को सिद्ध नहीं करना पड़ता है। स्वतः ही सिद्ध होता है। बापदादा ने कहा है; इसलिए हम कर रहे हैं। नहीं। यह सभी कहें कमाल है बदल गया है। यह नहीं कहो कि देखते नहीं हो क्या बदल गई हूँ। वाणी के बदले वृत्ति से काम लिया? अच्छा, और कुछ बात करना है? बोलो। कुछ नहीं? कोई नहीं।

अच्छा- सदा हर एक संकल्पों को प्रत्यक्षरूप में लाने वाले, सदा बाप के दिल का स्नेह स्वरूप द्वारा दिखाने वाले, सदा स्व परिवर्तन द्वारा सर्व का परिवर्तन करने का सहयोग देने वाले, सदा बाप की आशाओं को सहज साकार रूप देने वाले, सदा वायुमण्डल को श्रेष्ठ बनाने वाले निमित्त टीचर्स को बापदादा का स्नेह सम्पन्न यादप्यार और नमस्ते।

पार्टीः- सभी ने सुना तो बहुत है। सुनने में फुल हो गए। अभी बाक़ी क्या रहा? सुनने के बाद क्या रह गया? करना। सुनते भी, सुनाते भी बहुत हो। अभी श्रेष्ठ स्वरूप द्वारा साक्षात बाप समान बनना। साक्षात बाप समान बनना ही साक्षात्कार मूर्त बनना। जब तक बने नहीं, तब तक बाप का साक्षात्कार करा नहीं सकते। बाप का साक्षात्कार हमको ही कराना है, यह समझते हो? सारा जोन नंबर वन लेंगे? सभी को साक्षात्कार मूर्त बनना ही है। ज़रा भी कमी नहीं। मन्सा भी बाप समान, वाणी में भी समान, कर्म में भी बाप समान। हर कर्म करने के पहले बाप के चरित्र को सामने रखो। बाप ने क्या किया वैसे फॉलो करो। हिम्मत है ना? कुछ भी हो जाए सब कुछ त्याग करने के लिए तपस्वी मूर्त बनना है। एक बाप दूसरा न कोई। जहाँ एक बाप है, प्यार है तो तपस्या से प्यारा स्वरूप होता है, किसी सेवाकेंद्र से कोई व्यर्थ बात ना आवे। अच्छी-अच्छी बात आवे। कमाल है। वाह-वाह कहे, वाह बाबा वाह। यह हो सकता है? समाप्ति समारोह कब करेंगे? संतुष्ट रहना है, संतुष्ट करना है, दूसरे की संतुष्टता ही अपनी संतुष्टता है। जैसे अपने लिए सोचते हो जीवन में संतुष्टता चाहिए, वैसे दूसरों की संतुष्टता में अपनी संतुष्टता है। हरेक अपनी जिम्मेवारी ले, तो सबका लेना हुआ। जैसे बाप ने सभी को कैसे परिवर्तन किया। कैसे भी थे; लेकिन बाप ने देखा क्या? स्नेह व सहयोग से परिवर्तन किया ना। ऐसा फॉलो फादर। ओमशान्ति।

ॐ शांति

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

\-

01.01.2025